विचार बिन्दु

एकता का किला सबसे सुरक्षित होता है। न वह टूटता है और न उसमें रहने वाला कभी दुःखी होता है। –अज्ञात

लोक संस्कृति बनाम बाज़ार: क्या राजस्थान अपनी आत्मा खो रहा है?

जैसलमेर की सुनहरी रेत पर ढलती शाम में पारंपरिक वेशभूषा में सज्जित एक लोक कलाकार 'केसरिया बालम' गा रहा है। सामने देशी-विदेशी पर्यटकों की भीड़ है, कैमरे हैं, मोबाइल हैं, तालियाँ हैं-सब कुछ है। जो नहीं है, वह है वह आत्मीयता, वह सामुदायिक स्पंदन, जिसमें यह गीत कभी जन्मा था। जो कभी जीवन की लय था, वह आज 'इवेंट' बन गया है; जो कभी लोक का स्वाभाविक विस्तार था, वह अब बाज़ार का सुनियोजित प्रदर्शन है। सवाल यह है कि क्या हम राजस्थान की लोक संस्कृति को बचा रहे हैं, या उसे एक आकर्षक 'प्रोडक्ट' में बदलकर उसकी आत्मा को धीरे-धीरे समाप्त कर रहे हैं?

लोक संस्कृति की असली ताकत उसकी स्वाभाविकता में होती है। यह किसी मंच या प्रायोजक की मोहताज नहीं होती; यह खेत-खलिहान, आंगन-चौपाल, मेलों-त्योहारों में सांस लेती है। लेकिन जैसे-जैसे पर्यटन उद्योग ने राजस्थान को एक 'डेस्टिनेशन' के रूप में पैकेज किया, वैसे-वैसे लोक संस्कृति भी 'क्यूरेटेड एक्सपीरियंस' में बदलती चली गई। अब लोक नृत्य समय की पाबंदी में बंधा है-पांच से दस मिनट का 'शो'; गीतों के बोल और धुनें इस तरह तराशी जाती हैं कि वे दर्शकों को तुरंत लुभा सकें; पारंपरिक वाद्ययंत्रों की जगह इलेक्ट्रॉनिक साउंड ने ले ली है। यह सब इसलिए कि बाज़ार को 'तुरंत असर' चाहिए, 'धीरे-धीरे खुलने वाली' संवेदना नहीं।

उदाहरण हमारे सामने हैं। कभी मांगणियार और लंगा समुदायों के कलाकार अपने पारंपरिक संरक्षकों-स्थानीय जमींदारों और समुदायों-के लिए गाते थे। उनके गीतों में पीढ़ियों की स्मृतियाँ, रिश्तों की गर्माहट और स्थानीय इतिहास का जीवंत दस्तावेज़ होता था। आज वही कलाकार बड़े-बड़े होटलों और 'डेजर्ट सफारी' पैकेज का हिस्सा हैं। वे गा तो रहे हैं, लेकिन अब उनका गाना 'समय-सीमा' और 'दर्शक की पसंद' से संचालित है। 'पधारो म्हारे देश' अब आतिथ्य का आत्मीय निमंत्रण नहीं, बल्कि पर्यटन का ब्रांड-स्लोगन बन गया है। 'नीबूड़ा' का मूल स्वरूप भुलाया जा चुका है और हर कोई उसका वही रूप प्रस्तुत करता है जो 'हम दिल दे चुके सनम में पेश किया गया था।

इसी तरह कालबेलिया नृत्य को देखिए। यह नृत्य एक विशिष्ट समुदाय की जीवनशैली, उनकी गतिशीलता और प्रकृति से उनके संबंध का प्रतीक था। आज यह अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुत होता है-यह गर्व की बात हो सकती है-लेकिन इसके साथ ही इसमें 'दृश्यात्मक आकर्षण' बढ़ाने के लिए ऐसे तत्व जोड़े गए हैं, जो मूल परंपरा का हिस्सा नहीं थे। वेशभूषा अधिक चमकीली, मुद्राएँ अधिक नाटकीय, और प्रस्तुति अधिक 'दर्शनीय' बना दी गई है। क्या यह विकास है, या मूल स्वरूप की कीमत पर हासिल किया गया विस्तार?

हस्तशिल्प का हाल भी इससे अलग नहीं। बाड़मेर और जैसलमेर के कारीगरों की कढ़ाई, ब्लॉक प्रिंटिंग, और नीली मिट्टी की कला कभी स्थानीय जरूरतों और सौंदर्यबोध से जुड़ी थी। आज वही कला 'स्मृति-चिह्न' (souvenir) बनकर बिक रही है। डिज़ाइन इस तरह बदले जा रहे हैं कि वे विदेशी ग्राहकों को अधिक आकर्षित करें। रंग, पैटर्न और आकार-सब कुछ बाज़ार की मांग के अनुसार ढल रहा है। इससे कारीगरों की आय बढ़ी है-यह एक सकारात्मक पहलू है-लेकिन क्या इस प्रक्रिया में उनकी परंपरा की मौलिकता सुरक्षित रह पाई है?

ऐसा ही कुछ भोजन के साथ भी हुआ है। दाल-बाटी अब राजस्थान की सीमाओं को लांघ कर राष्ट्रीय व्यंजन बन चुका है। यह अच्छी बात है। हमने भी तो अन्य अनेक प्रांतों के व्यंजनों को खुले मन से स्वीकार किया है। लेकिन चिंता इस बात की की जानी चाहिए कि राजस्थान के पारंपरिक व्यंजन अपना मूल स्वरूप बनाए रखें। बेशक प्रयोग हों, फ्यूज़न भी हो, नवाचार भी हो, लेकिन कहीं अपना मूल भी सुरक्षित रहे। अभी हाल यह है कि राजस्थान में आप मूल राजस्थानी भोजन बड़ी मुश्क़िल से ही पा सकते हैं। राजस्थानी के नाम पर जो मिलता है वह राजस्थानी पंजाबी और मुग़लई का अजीब-ओ-ग़रीब मिश्रण होता है। राजस्थान के बहुत सारे पारंपरिक व्यंजन लुप्त होने की कगार पर है। उन्हें बचाने की किसी को फिक्र भी नहीं है। यह शुभ नहीं है।

> **बाज़ार के समर्थक यह तर्क देते हैं कि अगर पर्यटन और व्यवसायी करण न होता, तो ये लोक कलाएँ कब की विलुप्त हो चुकी होतीं। यह तर्क पूरी तरह गलत नहीं है। सच यह है कि बाज़ार ने इन कलाओं को एक नया जीवन दिया है, कलाकारों को आर्थिक संबल दिया है, और उन्हें वैश्विक मंच तक पहुँचाया है। लेकिन यह आधा सच है।**

बाज़ार के समर्थक यह तर्क देते हैं कि अगर पर्यटन और व्यवसायी करण न होता, तो ये लोक कलाएँ कब की विलुप्त हो चुकी होतीं। यह तर्क पूरी तरह गलत नहीं है। सच यह है कि बाज़ार ने इन कलाओं को एक नया जीवन दिया है, कलाकारों को आर्थिक संबल दिया है, और उन्हें वैश्विक मंच तक पहुँचाया है। लेकिन यह आधा सच है। दूसरा आधा सच यह है कि इस प्रक्रिया में लोक संस्कृति का 'संदर्भ' (context) विलुप्त होता जा रहा है। जब कला अपने सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ से कट जाती है, तो वह केवल 'प्रदर्शन' बनकर रह जाती है-एक ऐसी वस्तु, जिसे देखा और सराहा तो जा सकता है, लेकिन महसूस नहीं किया जा सकता।

सरकार और नीतियों की भूमिका भी यहाँ सवालों के घेरे में है। 'हेरिटेज' और 'कल्चरल टूरिज्म' के नाम पर बड़े-बड़े उत्सव और महोत्सव आयोजित किए जाते हैं-जैसे मरु महोत्सव, पुष्कर मेला आदि। ये आयोजन निश्चित रूप से ध्यान आकर्षित करते हैं, लेकिन क्या ये दीर्घकालिक संरक्षण का विकल्प हैं? क्या कलाकारों को साल भर स्थायी समर्थन, प्रशिक्षण और सामाजिक सुरक्षा मिलती है? क्या इन उत्सवों में राजस्थान की लोक संस्कृति को समुचित महत्त्व मिलता है? देखने में तो यह आता है कि सारे ही उत्सवों में भीड़ खींचने के लिए मुम्बई और बॉलीवुड से कलाकार आयात किए जाते हैं। अपने कलाकार तो केवल 'सीजनल डिमांड' के आधार पर याद किए जाते हैं? यह भी कि क्या इन सरकारी समारोहों में कलाकारों को वही सम्मान और महत्व वास्तव में मिलता है जिसके वे पात्र हैं? जब संस्कृति को केवल 'इवेंट' में समेट दिया जाता है, तो वह जीवन के प्रवाह से कटकर एक 'प्रदर्शनी' बन जाती है।

यह संकट केवल कला का नहीं, पहचान का भी है। जब राजस्थान की छवि को 'डेजर्ट सफारी ; लोक नृत्य शो ; ऊँट की सवारी' तक सीमित कर दिया जाता है, तो एक जटिल और बहुआयामी संस्कृति को एक सरल, उपभोक्तावादी चित्र में बदल दिया जाता है। यह 'इमेज' बिकाऊ है, लेकिन यह 'पहचान' नहीं है। पहचान वह होती है, जो भीतर से बनती है; इमेज वह होती है, जो बाहर से गढ़ी जाती है।

सबसे चिंताजनक पहलू यह है कि नई पीढ़ी इसी 'बाज़ारीकृत' रूप को ही असली समझने लगी है। गाँवों में भी अब पारंपरिक गीतों और नृत्यों की जगह फिल्मी या फ्यूज़न रूप अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं। जब परंपरा की जड़ें ही कमजोर हो जाएँगी, तो ऊपर का चमकीला ढांचा कितने दिन टिकेगा?

तो क्या समाधान है? क्या बाज़ार से पूरी तरह मुंह मोड़ लिया जाए? शायद नहीं। आज के समय में यह न तो संभव है, न ही व्यावहारिक। लेकिन यह जरूर जरूरी है कि बाज़ार को ही अंतिम निर्णायक न बनने दिया जाए। लोक संस्कृति का संरक्षण केवल 'डिमांड और सप्लाई' का मामला नहीं हो सकता; यह एक सामाजिक और सांस्कृतिक ज़िम्मेदारी है। इसके लिए समुदायों को केंद्र में रखना होगा, कलाकारों को केवल 'परफॉर्मर' नहीं, 'परंपरा के वाहक' के रूप में देखना होगा, और नीतियों को अल्पकालिक प्रदर्शन से आगे बढ़कर दीर्घकालिक संरक्षण की दिशा में ले जाना होगा। एक ज़रूरी काम यह किया जाना चाहिए कि लोक संस्कृति के मूल स्वरूप को संरक्षित करने के हर संभव प्रयास हो और उसका प्रामाणिक डॉक्यूमेंटेशन हो ताकि ज़रूरत पड़ने पर उसस संदर्भ के रूप में काम लिया जा सके। इस तरह का काम बहुत सावधानी और समझ की अपेक्षा रखता है। लेकिन यह किया ही जाना चाहिए।

आखिरकार, सवाल यह नहीं है कि लोक संस्कृति बदल रही है-परिवर्तन तो स्वाभाविक है। असली सवाल यह है कि क्या यह परिवर्तन भीतर से आ रहा है, या बाहर से बाज़ार की मांग के अनुसार थोपा जा रहा है? अगर राजस्थान की लोक संस्कृति केवल बाज़ार की शर्तों पर जीवित रहती है, तो वह जीवित दिखते हुए भी भीतर से मृत हो जाएगी। उसे बचाना है, तो उसे उसके अपने लोगों, उसकी अपनी जमीन और उसकी अपनी संवेदना के साथ फिर से जोड़ना होगा-वरना एक दिन हम पाएंगे कि हमारे पास रंग-बिरंगे 'शो' तो हैं, लेकिन उनके पीछे की आत्मा कहीं खो चुकी है।

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

क्या राजस्थान में बी.एड की डिग्री अब सिर्फ़ रद्दी का टुकड़ा है ?

प्रोफेसर अशोक कुमार

राजस्थान में बी.एड. या बैचलर ऑफ एजुकेशन की स्थिति वर्तमान में एक क्रांतिकारी बदलाव और गंभीर संकट के चौराहे पर खड़ी है। जहाँ एक ओर राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत भविष्य के शिक्षकों को और अधिक दक्ष बनाने की तैयारी है, वहीं दूसरी ओर राज्य के सैकड़ों महाविद्यालय बंद होने की कगार पर हैं।

1. प्रवेश परीक्षाओं के आंकड़ों में भारी गिरावट : राजस्थान में बी.एड. या बैचलर ऑफ एजुकेशन करने का क्रेज पिछले दो वर्षों में आश्चर्यजनक रूप से गिरा है। राज्य स्तरीय प्रवेश परीक्षा प्री-टीचर एजुकेशन टेस्ट (पीटीईटी) के आंकड़े इसकी पुष्टि करते हैं।

छात्रों की घटती संख्या: वर्ष 2023 में जहाँ लगभग 5.21 लाख छात्रों ने आवेदन किया था, वहीं 2025 में यह संख्या घटकर मात्र 2.73 लाख के आसपास रह गई। 2026 के सत्र के लिए भी आवेदन प्रक्रिया (वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा द्वारा संचालित) जारी है, लेकिन प्रारंभिक रुझान बताते हैं कि अब छात्र शिक्षण को अंतिम विकल्प के रूप में देख रहे हैं।

खाली सीटें: राजस्थान के लगभग 950 से अधिक बी.एड. या बैचलर ऑफ एजुकेशन कॉलेजों में कुल सीटें करीब 1.05 लाख हैं। पिछले सत्र में कई दौर की काउंसलिंग के बाद भी लगभग 15,000 से 20,000 सीटें खाली रह गईं, जो निजी कॉलेज संचालकों के लिए खतरे की घंटी है।

2. 700 महाविद्यालयों पर बंद होने का संकट : अक्टूबर 2025 में आई रिपोर्ट्स के अनुसार, राजस्थान के लगभग 700 बी.एड. कॉलेज बंद होने की स्थिति में हैं। इसके पीछे मुख्य कारण नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन - राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के नए नियम और राज्य सरकार की नीतियां हैं:

बहु-विषयक संस्थान की शर्त: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार, 2030 तक केवल वही संस्थान बी.एड. करा पाएंगे जो बहु-विषयक होंगे (जहाँ कला, विज्ञान, वाणिज्य आदि के अन्य कोर्स भी चलते हों)। राजस्थान के अधिकांश कॉलेज स्टैंडअलोन (केवल बी.एड. कराने वाले) हैं।

अनापत्ति प्रमाण पत्र का मुद्दा: राज्य सरकार ने नए शैक्षिणक कॉलेज खोलने या मौजूदा बी.एड. कॉलेजों को सामान्य कॉलेजों में बदलने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र देने पर फिलहाल कड़ाई कर रखी है। यदि ये कॉलेज 2030 तक खुद को अपग्रेड नहीं करते, तो इनकी मान्यता स्वत: समाप्त हो जाएगी।

3. सुप्रीम कोर्ट का फैसला: बी.एड. बीएसटीसी (बेसिक स्कूल टीचिंग सर्टिफिकेट) विवाद

राजस्थान के छात्रों के लिए सबसे बड़ा झटका 11 अगस्त 2023 को आया सुप्रीम कोर्ट का फैसला रहा। इस फैसले ने राज्य के लाखों बी.एड अभ्यर्थियों के सपनों को प्रभावित किया।

प्राथमिक भर्ती से बाहर: कोर्ट ने स्पष्ट कर दिया कि बी.एड . धारक अब कक्षा 1 से 5 (लेवल 1) के शिक्षक नहीं बन पाएंगे। राजस्थान में प्राथमिक शिक्षकों के पद सबसे अधिक संख्या में आते हैं।

सीमित अवसर: अब बी.एड डिग्री केवल ग्रेड-2 (वरिष्ठ अध्यापक) और ग्रेड-3, लेवल 2, तक ही सीमित रह गई है। इस कारण छात्रों ने बी.एड . के बजाय बीएसटीसी (बेसिक स्कूल टीचिंग सर्टिफिकेट), डी.एल.एड. की ओर रुख करना शुरू कर दिया है।

4. कोर्स की अवधि में बदलाव और असमंजस : वर्तमान में राजस्थान में तीन तरह के बी.एड मॉडल पर चर्चा हो रही है, जिससे छात्र भ्रमित हैं:–

2-वर्षीय बी.एड : यह वर्तमान में चल रहा है, लेकिन चर्चा है कि 2030 के बाद इसे धीरे-धीरे बंद कर दिया जाएगा। 2026 के सत्र के लिए वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय कोटा इसके आवेदन ले रहा है।

4-वर्षीय इंटीग्रेटेड टीचर एजुकेशन प्रोग्राम , राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार 12वीं के बाद सीधे बी.एड. (बीए-बीएड और बीएससी-बीएड) को भविष्य का मानक माना जा रहा है। जोधपुर जैसे संस्थानों ने भी कोर्स शुरू कर दिया है।

1-वर्षीय बी.एड . (प्रस्तावित): नेशनल काउंसिल फॉर टीचर एजुकेशन ने सत्र 2026-27 से मास्टर डिग्री धारकों के लिए 1-वर्षीय बी.एड। दोबारा शुरू करने का ड्राफ्ट तैयार किया है। छात्र इस छोटे कोर्स के इंतजार में 2-वर्षीय कोर्स में प्रवेश नहीं ले रहे हैं।

5. राजस्थान में बेरोजगारी और पेपर लीक का मनोवैज्ञानिक असर

राजस्थान में पिछले कुछ वर्षों में शिक्षक भर्तियों (राजस्थान अध्यापक पात्रता परीक्षा और वरिष्ठ अध्यापक) में हुए पेपर लीक और भर्ती परीक्षाओं के समय पर न होने से युवाओं का सिस्टम से भरोसा उठा है।

आर्थिक बोझ: निजी कॉलेजों की फीस लगभग 27,000 रुपये प्रति वर्ष है, इसके अलावा डोनेशन और अन्य खर्चे मिलाकर छात्र का बजट 1 लाख रुपये पार कर जाता है। भर्ती की अनिश्चितता को देखते हुए छात्र यह जोखिम नहीं उठाना चाहते।

गुणवत्ता का अभाव: राजस्थान के कई कॉलेज ''बिना उपस्थिति वाला'' मोड पर चल रहे हैं। बिना प्रैक्टिकल ट्रेनिंग के छात्र डिग्री तो ले लेते हैं, लेकिन शिक्षक भर्ती परीक्षाओं को पास नहीं कर पाते।

भविष्य की तस्वीर: आगे क्या होगा?

महाविद्यालय केवल बड़े और बहु-विषयक कॉलेज ही बचेंगे। छोटे शहरों के स्टैंडअलोन कॉलेज बंद हो जाएंगे। डिजिटल टीचिंग और ब्लेंडेड लर्निंग अनिवार्य होगी। भविष्य के शिक्षकों को और टेक-टूल्स का ज्ञान होना जरूरी होगा। सरकारी नौकरियों में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी, लेकिन निजी क्षेत्र में केवल कुशल शिक्षकों की भारी मांग रहेगी।

निष्कर्ष- राजस्थान में बी.एड . का भविष्य अंधकारमय नहीं है, बल्कि यह 'परिवर्तन' के दौर में है। जो कॉलेज खुद को आधुनिक तकनीक और सरकारी मानकों के अनुसार ढाल लेंगे, वे टिके रहेंगे। छात्रों को भी यह समझना होगा कि अब केवल डिग्री पर्याप्त नहीं है; उन्हें खुद को कक्षा 9-12 के लिए विषय विशेषज्ञ के रूप में तैयार करना होगा।

–प्रोफेसर अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर,
गोरखपुर विश्वविद्यालय

भरतपुर बना सौर ऊर्जा का उभरता मॉडल, सैकड़ों घरों का बिजली बिल शून्य

पीएम सूर्य घर व कुसुम योजना से बदली तस्वीर

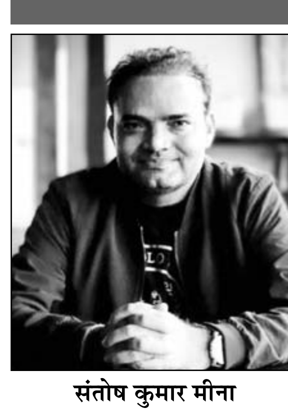

संतोष कुमार मीना

राजस्थान में ऊर्जा आत्मनिर्भरता और हरित विकास की दिशा में भरतपुर जिला तेजी से नई पहचान बना रहा है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में प्रदेशभर में सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए चलाया जा रहा अभियान अब जमीनी स्तर पर प्रभाव दिखाने लगा है। सरकारी और निजी भवनों की छतों पर सोलर प्लांट स्थापित किए जा रहे हैं, जिससे न केवल बिजली बिलों में भारी कमी आई है बल्कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी ठोस कदम उठे हैं।

21 मेगावाट रूफटॉप सोलर का लक्ष्य, तेजी से बढ़ता काम : - जिले में 21 मेगावाट क्षमता के रूफटॉप सोलर प्लांट स्थापित करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसे 10, 5 और 6 मेगावाट के तीन चरणों में बांटकर विभिन्न एजेंसियों को जिम्मेदारी सौंपी गई है। प्रशासन द्वारा निरंतर मॉनिटरिंग के चलते कार्य गति पकड़ रहा है। भरतपुर मुख्यालय के साथ नदबई, वैर, उच्चैन, बयाना, रूपवास और छौंकरवाड़ा क्षेत्रों में 1928 सरकारी भवनों की पहचान की गई है। इनमें से अब तक 20 भवनों पर 0.84 मेगावाट क्षमता के सोलर संयंत्र स्थापित हो चुके हैं, जबकि 60 भवनों पर कार्य प्रगति पर है।

पीएम कुसुम योजना किसानों के लिए वरदान :- प्रधानमंत्री कुसुम योजना के तहत भी भरतपुर में सौर ऊर्जा का विस्तार तेजी से हो रहा है। जिले में अब तक 5 सोलर प्लांट स्थापित किए जा चुके हैं जिसमें बयाना के ब्रह्मबाद में 2, नदबई के बरौलीछार में 1 तथा वैर के धरसोनी और पथेना में 1-1 प्लांट लगाए गए हैं। कुसुम-बी योजना के तहत वर्ष 2024-25 में 52 कनेक्शन जारी किए गए, जबकि 2025-26 में 19 नए कनेक्शनों की प्रक्रिया जारी है। यह योजना किसानों को सौर ऊर्जा से जोड़ते हुए सिंचाई लागत को कम करने और आय बढ़ाने में सहायक बन रही है।

पीएम सूर्य घर योजना 1397 घरों में आई रोशनी :- प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना ने आमजन के जीवन में बड़ा बदलाव लाया है। जिले में अब तक 1397 घरों का बिजली बिल शून्य हो चुका है। छतों पर लगे सोलर पैनल न केवल बिजली की जरूरत पूरी कर रहे हैं, बल्कि अतिरिक्त बिजली उत्पादन की संभावनाएं भी बढ़ा रहे हैं। आसान और किफायती सोलर सिस्टम

सरकार ने सोलर सिस्टम को आमजन के लिए सरल और सुलभ बनाया है। 3 किलोवाट तक के सिस्टम पर 40-60 प्रतिशत तक सब्सिडी मात्र 6 प्रतिशत ब्याज दर पर ऋण सुविधा प्रदान की जा रही हैं, जिसके तहत 1 किलोवाट पर 30 हजार रूपये, 2 किलोवाट पर 60 हजार रूपये और 3 किलोवाट या अधिक पर 78 हजार रूपये तक सब्सिडी इन प्रोत्साहनों के कारण आम लोग तेजी से सौर ऊर्जा की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

हरित भविष्य की ओर बढ़ता भरतपुर : -भरतपुर अब सौर ऊर्जा के क्षेत्र में एक मॉडल जिले के रूप में उभर रहा है। यह पहल न केवल बिजली बिलों को शून्य करने में मददगार साबित हो रही है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और ऊर्जा आत्मनिर्भरता को भी नई दिशा दे रही है। आने वाले समय में भरतपुर का यह मॉडल पूरे राजस्थान के लिए प्रेरणास्त्रोत बनेगा और हरित ऊर्जा क्रांति को नई गति देगा।

संतोष कुमार मीना
पीआरओ, भरतपुर।

श्रीगंगानगर के ग्रामीण इलाकों में तेज बारिश हुई

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले में मौसम ने अचानक करवट ली है। वेस्टर्न डिस्टरबेंस के सक्रिय होने से रविवार सुबह कई ग्रामीण इलाकों में तेज बारिश हुई, जिससे तापमान में गिरावट आई और मौसम सुहावना हो गया। मौसम विभाग ने जिले में बारिश के साथ ओलावृष्टि का अलर्ट जारी किया है। वहीं विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस बार अप्रैल महीने में भीषण गर्मी से राहत मिल सकती है।

■ **मौसम विभाग ने श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिले में बारिश के साथ ओलावृष्टि की चेतावनी जारी की**

राजस्थान में वेस्टर्न डिस्टरबेंस सक्रिय होने के चलते श्रीगंगानगर और आसपास के क्षेत्रों में मौसम में बड़ा बदलाव देखने को मिला। रविवार सुबह से ही बादल छाए रहे और कई ग्रामीण इलाकों में तेज बारिश दर्ज की गई। इसके साथ ही धूल भरी आंधी और ठंडी हवाओं ने वातावरण को ठंडा कर दिया। मौसम विभाग ने श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिले में बारिश के साथ ओलावृष्टि की चेतावनी जारी की है। विभाग के अनुसार, इस दौरान 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चल सकती हैं, जिससे जनजीवन प्रभावित होने की संभावना है। रविवार सुबह श्रीगंगानगर, सादुलशहर, लालगढ़ जाटान, चूनावढ़ और आसपास के क्षेत्रों में बारिश हुई। अचानक बदले मौसम के कारण लोगों को गर्मी से राहत मिली, वहीं किसानों के लिए भी यह बारिश फायदेमंद मानी जा रही है।

मौसम राडार स्टेशन, श्रीगंगानगर पर रविवार सुबह न्यूनतम तापमान 20.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इससे पहले शनिवार को न्यूनतम तापमान 18.5 डिग्री और अधिकतम तापमान 35.4 डिग्री रहा, जबकि शुक्रवार को न्यूनतम तापमान 19.7 डिग्री और अधिकतम 33 डिग्री रिकॉर्ड किया गया था। लगातार हो रहे बदलाव से साफ है कि मौसम में ठंडक बनी हुई है। मौसम विशेषज्ञों का मानना है कि इस बार अप्रैल महीने में भीषण गर्मी नहीं पड़ेगी। वेस्टर्न डिस्टरबेंस के लगातार सक्रिय रहने से तापमान नियंत्रित रहेगा और लोगों को गर्मी से राहत मिल सकती है।

डीआरएम ने जोधपुर-समदड़ी रेलखंड का निरीक्षण किया

जोधपुर, (कासं)। उत्तर-पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल रेल प्रबंधक अनुराग त्रिपाठी ने जोधपुर-समदड़ी रेलखंड पर गाड़ी संख्या 14887, ऋषिकेश-बाड़मेर एक्सप्रेस के लोकोमोटिव से फुटप्लेट निरीक्षण कर ट्रैक, सिग्नलिंग, लेवल क्रॉसिंग एवं परिचालन व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने रेलवे द्वारा निर्धारित सुरक्षा एवं संरक्षा मानकों के अनुपालन की विस्तृत समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

■ **डीआरएम ने ट्रैक, सिग्नलिंग, लेवल क्रॉसिंग एवं परिचालन व्यवस्थायें जांची और रेलवे द्वारा निर्धारित सुरक्षा एवं संरक्षा मानकों के अनुपालन की समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिए**

निरीक्षण के दौरान डीआरएम ने रेल पटरियों की गुणवत्ता, जॉइंट्स एवं फिटिंग्स की स्थिति, सिग्नलिंग सिस्टम की कार्यक्षमता और विश्वसनीयता, स्टेशनों के बीच ट्रैक की साफ-सफाई साथ ही लेवल क्रॉसिंग पर तैनात सुरक्षा प्रबंधों का सुक्ष्मता से अवलोकन किया। उन्होंने यह सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया कि सभी व्यवस्थाएं निर्धारित सुरक्षा प्रोटोकॉल, मानक संचालन प्रक्रियाओं तथा संरक्षा दिशानिर्देशों के अनुरूप संचालित हों। इसके अलावा उन्होंने ट्रेन संचालन के दौरान सतर्कता, समयबद्धता तथा आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने की तैयारियों की भी समीक्षा की। निरीक्षण के दौरान क्रू मेंबर्स के साथ संवाद कर परिचालन से जुड़ी व्यवहारिक चुनौतियों की जानकारी ली और आवश्यक सुधारात्मक कदमों पर चर्चा की। इस दौरान पाई गई खामियों को तत्काल प्रभाव से दूर करने के निर्देश दिए गए।

डीआरएम ने स्पष्ट किया कि सुरक्षा एवं संरक्षा मानकों में किसी भी प्रकार की लापरवाही स्वीकार नहीं की जाएगी तथा नियमित मॉनिटरिंग और निरीक्षण के माध्यम से इन मानकों को और अधिक सुदृढ़ किया जाएगा, ताकि रेल संचालन सुरक्षित, संरक्षित एवं सुचारु रूप से जारी रह सके।

अनुराग त्रिपाठी, डीआरएम, जोधपुर मंडल का कहना है कि यात्रियों की सुरक्षा हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। जोधपुर-समदड़ी रेलखंड पर सभी सुरक्षा एवं संरक्षा मानकों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया जा रहा है। जहां भी कमियां पाई जाती हैं, उन्हें तुरंत दूर कर सुरक्षित एवं सुचारु रेल संचालन बनाए रखा जाता है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 30 मार्च, 2026

चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2083, मघा नक्षत्र दिन 2:48 तक, शूल योग सायं 4:51 तक, बालव करण प्रात: 7:10 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा। **ग्रह स्थिति:** सूर्य-मीन, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कुम्भ, बुध-कुम्भ, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग दिन 2:48 तक है। आज सोम प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी, श्री महावीर जयन्ती, मदन द्वादशी, विष्णु दमनोत्सव है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:56 तक, शुभ 9:28 से 11:00 तक, चर 2:03 से 3:35 तक, लाभ-अमृत 3:35 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:24, सूर्यास्त 6:39

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक यात्रा संभव है।

वृष
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

मिथुन
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

कर्क
आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

तुला
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

वृश्चिक
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा, उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

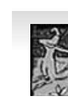

धनु
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।